पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2021-23 प्रकाशित 01.12.2023 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई. एफ. एस.कोड - SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868051444 पर एस.एम.एस कर दें या 9810117464 पर Paytm कर दें। – अनिल आर्य

वर्ष-40 अंक-13 मार्गशीर्ष-2080 दयानन्दाब्द 200 01 दिसम्बर से 15 दिसम्बर 2023 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.12.2023, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

ऋषिकेश में लाला लाजपत राय बलिदान दिवस सम्पन्न

लाला लाजपतराय युवकों के सदैव आदर्श रहेंगे –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

ऋषिकेश, शुक्रवार 17 नवम्बर 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आनंद प्रकाश योग आश्रम मुनि की रेती में पंजाब केसरी लाला लाजपत राय को 95 वें बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ के साथ हुआ। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि पंजाब केसरी लाला लाजपत राय का बलिदान सदैव युवाओ का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।लाला लाजपत राय कांग्रेस के गर्म दल के नेता थे और पंजाब नेशनल बैंक के संस्थापक रहे। उन्होंने वीरता का बाना पहनने और कायरता छोड़ने का आह्वान किया।

लाला जी पर आर्य समाज का गहरा प्रभाव पड़ा और वह देश सेवा में जुट गए साथ ही हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों छुआछूत बाल विवाह का विरोध किया। लाला जी पूर्ण स्वाधीनता के पक्षधर थे जब लार्ड साईंमन भारत में आए तो उसके विरोध में विशाल जलूस 30 अक्टूबर 1928 को निकाला गया। पुलिस कप्तान स्काट ने लाठीचार्ज किया जिसमें लाला जी गंभीर रूप से घायल हो गए और कुछ दिन बाद 17 नवम्बर 1928 को उनका देहांत हो गया। फिर क्रांतिकारियों ने ठीक एक महीने बाद स्काट के धोखे में सांडर्स को गोलियों से भून कर लाला जी की मौत का बदला लिया।

आज उनके बलिदान को याद करते हुए सभी को राष्ट्र रक्षा का संकल्प लेना चाहिए। समारोह की अध्यक्षता योग गुरु आचार्य विश्वकेतु ने की उन्होंने कहा कि अनेकों क्रांतिकारियों के बलिदान स्वरूप हमें यह आजादी मिली है और महर्षि दयानन्द सरस्वती इस क्रान्ति के जनक रहे हैं हमें आजादी की रक्षा करनी होगी। दिल्ली से आयी प्रवीण आर्या पिंकी ने मधुर गीत सुनाए। इस अवसर पर 10 से अधिक देशों के योग शिक्षक संजीवनी ऑस्ट्रेलिया, ओमकार नाथ यू ए, भक्ति प्रकाश कैनेडा, श्री मान जी ब्राजील, फियोना इंग्लैंड, सूर्य दास पैरू, सोमा देवी जर्मनी, आरोग्य देवी न्यूजीलैंड, सविता मास्को, डॉ. ओम प्रकाश यू एस ए, आस्था आर्य, प्रदीप तिवारी, सिद्धार्थ, धीरेन्द्र व प्रमोद रावत आदि उपस्थित थे।

हरिद्वार व्यास आश्रम में वैदिक सत्संग संपन्न

रविवार 19 नवम्बर 2023, व्यास आश्रम हरिद्वार में भव्य वैदिक सत्संग संपन्न हुआ। इस अवसर पर माता विमला गुप्ता (आयु 96 वर्ष) का अभिनंदन करते अनिल आर्य, प्रवीण आर्य पिंकी, ललित गुप्ता, रमेश गुप्ता, व द्वितीय चित्र में श्रीमती ललित गुप्ता व श्री रमेश गुप्ता का अभिनंदन करते अनिल आर्य, प्रवीण आर्य पिंकी, सुभाष गुप्ता, छायाकार आस्था आर्य।

कल्याण मार्ग के पथिक वीर विप्र योद्धा ऋषिभक्त स्वामी श्रद्धानन्द

❑ मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

स्वामी श्रद्धानन्द ऋषि दयानन्द के शिष्यों में एक प्रमुख शिष्य हैं जिनका जीवन एवं कार्य सभी आर्यजनों व देशवासियों के लिये अभिनन्दनीय एवं अनुकरणीय हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी का निजी जीवन ऋषि दयानन्द एवं आर्यसमाज के सम्पर्क में आने से पूर्व अनेक प्रकार के दुर्व्यसनों से ग्रस्त था। इन दुव्यर्सनों के त्याग में ऋषि दयानन्द के साक्षात् दर्शनों से प्राप्त प्रेरणा एवं आर्यसमाज के सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों के अध्ययन का बहुत महत्वपूर्ण स्थान रहा। स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' नाम से लिखी है। इस कथा में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने जीवन के सभी पक्षों का प्रकाश किया है। उनकी आत्मकथा शायद पहली आत्मकथा है जिसमें एक महापुरुष ने अपने चारित्रिक पतन की घटनाओं का भी विस्तृत एवं समालोचनात्मक वर्णन करते हुए अपने हृदय के सभी भावों को अपने पाठकों के सम्मुख खोलकर रखा है। ऐसा साहस नगण्य लोग ही कर सकते हैं। स्वामी जी की आत्मकथा एवं उनके किये कार्यों पर दृष्टि डालने से उनके प्रति श्रद्धा एवं प्रेम उमड़ता है। आज के युग में हम किसी व्यक्ति से ऐसी अपेक्षा नहीं कर सकते कि वह अपने जीवन की अनेकानेक बुराईयों को दूर कर स्वामी श्रद्धानन्द जी जैसा जीवन व्यतीत कर सकता है। इस लेख में हम उनके प्रमुख कार्यों व घटनाओं को स्मरण कर रहे हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बचपन का नाम बृहस्पति था। आपका जन्म गुरुवार (फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी 1913 व्रिकमी) 3 अप्रैल, सन् 1856 को ग्राम तलवन जिला जालंधर (पंजाब) में लाला नानकचन्द जी क्षत्रिय के घर में हुआ था। पिता पुलिस विभाग में सेवारत रहे। जन्म के कुछ समय बाद पिता से आपको मुंशीराम नाम प्राप्त हुआ था जो संन्यास से पूर्व तक रहा। जन्म के तीन वर्ष बाद बरेली नगर में आपकी शिक्षा आरम्भ हुई थी। 10 वर्ष की अवस्था होने पर सन् 1866 में काशी में आपका उपनयन संस्कार हुआ था। इन दिनों आपके पिता इसी स्थान पर सेवारत व पदासीन थे। 17 वर्ष की अवस्था में आप क्वीन्स कालेज, बनारस में अध्ययन हेतु प्रविष्ट हुए थे। श्री मोतीलाल नेहरू इस कालेज में आपके सहपाठी थे। 21 वर्ष की आयु में मुंशीराम जी का विवाह हुआ। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती शिवदेवी जी धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत थी। अपने पतिधर्म का इतनी उत्तमता से निर्वाह किया जिसे स्वामी श्रद्धनन्द जी की आत्मकथा पढ़कर ही जाना जा सकता है। माता शिवदेवी जी के पिता सोंधी परिवार के लाला शालिग्राम थे। सन् 1879 में मुंशीराम जी के जीवन में अनेक घटनायें घटी जिन्होंने पौराणिक रीति से पूजापाठ करने वाले मुंशीराम जी को नास्तिक विचारों का युवक बना दिया था। जिन दिनों आप अपने पिता के साथ बरेली में रह रहे थे, सौभाग्य से तब वहां वेदों के अपूर्व विद्वान तथा वेदों के प्रचारक ऋषि दयानन्द का उपदेशार्थ पधारना हुआ।

स्वामी दयानन्द के बरेली में आयोजित उपदेशों में सुरक्षा की दृष्टि से मुंशीराम जी के पिता नानक चन्द जी को ड्यूटी पर नियुक्त किया गया था। ऋषि दयानन्द के उपदेश सुनने उन दिनों बरेली के बड़े बड़े अंग्रेज अधिकारी भी आया करते थे। उपदेशों में सत्यधर्म की मान्यताओं का उल्लेख व उनका मण्डन तथा असत्य व तर्कहीन बातों का खण्डन किया जाता था। ऋषि दयानन्द ईश्वर में विश्वास रखने वाले उच्चकोटि के महापुरुष व महात्मा थे। अतः मुंशीराम जी के पिता ने मुंशीराम जी को ऋषि दयानन्द के व्याख्यान सुनने के लिए वहां जाने की प्रेरणा की। पिताभक्त मुंशीराम जी अपने पिता की प्रसन्नता के लिये ऋषि दयानन्द के प्रवचनों में गये थे। उन्होंने न केवल उनके उपदेश ही सुने थे अपितु उनसे शंका समाधान भी किया था। इसे हम नास्तिक–आस्तिक संवाद भी कह सकते हैं। ऋषि दयानन्द ने मुंशीराम जी के सभी प्रश्नों व शंकाओं का समाधान कर दिया था। इससे मुंशीराम जी के मन व आत्मा में सच्ची आस्तिकता का बीज पुनः अंकुरित हो गया। समय आने पर वह विचार फला व फूला और उसने मुंशीराम जी को भी एक आदर्श ईश्वर–भक्त तथा देश व समाज का सुधारक ही नहीं बनाया अपितु देश का निर्माता एवं वैदिक धर्म का आदर्श प्रचारक व सेवक बनने का गौरवपूर्ण अवसर भी प्रदान किया। इससे मुंशीराम जी एक आदर्श देशभक्त, समाज सुधारक तथा वैदिक धर्म के उद्धारक व प्रचारक बने। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपनी आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' नाम से लिखी है। इस पुस्तक को सभी पाठकों को पढ़ना चाहिये। इससे उन्हें भी कल्याण के मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्राप्त होगी।

मुंशीराम जी संन्यास धारण करने से पूर्व अपने जीवन में महात्मा मुंशीराम जी के नाम से प्रसिद्ध हुए। आप सत्यार्थप्रकाश पढ़कर व उससे प्रभावित होकर सन् 1875 में आर्यसमाज की स्थापना के 9 वर्ष बाद सन् 1884 में आर्यसमाज, जालन्धर के सदस्य बने थे। अपनी विद्वता, सामाजिक कार्यों एवं संगठन विषयक योग्यता सहित वैदिक धर्म के प्रति समर्पण के कारण आर्यसमाज का सदस्य बनने के दो वर्ष बाद सन् 1886 में ही आप आर्यसमाज जालन्धर के प्रधान चुने गये। आपकी शिक्षा मुख्तारी की परीक्षा पास करने तक हुई थी। आपने सन् 1888 में जालन्धर में वकालत करनी आरम्भ की थी। आप वही मुकदमें लिया करते थे जो सत्य हुआ करते थे। किसी मुकदमें का झूठा होना यदि आपको पता चलता तो उसे आप छोड़ देते थे। अपने ज्ञान एवं पुरुषार्थ से शीघ्र ही आप एक सफल वकील सिद्ध हुए थे। आपने अपनी आय से जालन्धर में एक बड़ी कोठी बनवाई थी जिसे बाद में आपने अपनी अन्तिम सम्पत्ति के रूप में वेद प्रचारार्थ गुरुकुल कांगड़ी को दान कर दी थी। सन् 1889 की बैसाखी के दिन आपने जालन्धर से 'सद्धर्म प्रचारक' नामक एक उर्दू पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया था। यह पत्र भी अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। बाद में हिन्दी की महत्ता के कारण आपने भारी घाटा उठाकर इसका प्रकाशन हिन्दी भाषा में कर दिया। इस पत्र में प्रकाशित महात्मा मुंशीराम जी के लेख व सम्पादकीय पंजाब के पाठकों द्वारा बहुत रुचि से पढ़े जाते थे। सन् 1890 में महात्मा मुंशीराम जी ने लाला देवराज जी के साथ मिलकर जालन्धर में एक 'आर्य कन्या महाविद्यालय' स्कूल व कालेज की स्थापना की थी। यह वह समय था जब माता–पिता अपनी कन्यायों को स्कूल भेजकर पढ़ाते नहीं थे। ऐसे समय में कन्यायों का विद्यालय खोलना एक क्रान्तिकारी कार्य था। वर्तमान में यह जालन्धर का कन्याओं का सबसे बड़ा महाविद्यालय है। अथर्ववेद, सामवेद भाष्यकार तथा अनेक वैदिक ग्रन्थों के लेखक पं. विश्वनाथ विद्यालंकार वेदोपाध्याय जी की धर्मपत्नी माता कुन्ती देवी इसी महाविद्यालय की छात्रा थी। हमारा सौभाग्य है कि हमें पंडित विश्वनाथ विद्यालंकार जी सहित माता कुन्ती देवी जी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त रहा है। अपने इस कार्य के कारण भी महात्मा मुंशीराम जी, जो बाद में स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए, अमर हैं। सन् 1891 में महात्मा जी की धर्मपत्नी माता शिवदेवी जी का निधन हुआ। इस समय महात्मा ही का वय मात्र 35 वर्ष का था। इससे आप पर अपने दो पुत्रों तथा तीन पुत्रियों के पालन पोषण का भार भी आ गया था। सभी सामाजिक कर्तव्यों को करते हुए आपने इस दायित्व को भी बहुत कुशलता से निभाया और अपने बच्चों को माता–पिता दोनों का ही प्यार व स्नेह दिया। महात्मा मुंशीराम जी सन् 1892 में आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के प्रधान निर्वाचित हुए। महर्षि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश में वर्णित प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के प्रतिनिधि गुरुकुलों की परम्परा को पुनर्जीवित करने के लिए आपने ऋषि दयानन्द के स्वप्नों के अनुरूप गुरुकुल की स्थापना के लिये सन् 1892 में तीस हजार रुपये एकत्र करने का संकल्प लेकर गृहत्याग कर दिया था। कुछ ही समय में आपका संकल्प पूरा हो गया और संकल्प से अधिक धनराशि प्राप्ती हुई थी। उन दिनों तीस हजार रूपये बहुत बड़ी धनराशि हुआ करती थी। इसी धनराशि के एकत्र होने के पश्चात हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम की भूमि को दान में प्राप्त किया गया था जहां सन् 1902 में आपके स्वप्नों का प्रसिद्ध गुरुकुल कागड़ी स्थापित हुआ। आपके समर्पण व योग्यता से यह गुरुकुल दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति को प्राप्त हुआ। इसकी प्रसिद्धि को सुनकर इंग्लैण्ड से श्री रैमजे मैकडानल जो बाद में इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री बने, गुरुकुल पधारे थे और यहां स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ रहे थे। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रशंसा की थी और उन्हें ईसाई मत के संस्थापक ईसामसीह के समान 'जीवित ईसामसीह' बताया था। कुछ समय बाद इस गुरुकुल में भारत के वायसराय श्री जेम्स फोर्ड भी आये थे। गुरुकुल की सफलता को बताने वाले अनेक उदाहरण हैं परन्तु स्थानाभाव के कारण उनका उल्लेख नहीं कर रहे हैं। इतना अवश्य लिख देते हैं कि इस गुरुकुल से देश को वेदों के बहुत बड़े आचार्य व विद्वान, क्रान्तिकारी, देशभक्त, समाचार पत्रों के सम्पादक, इतिहासकार, आजादी के आन्दोलनकारी आदि मिले हैं। पाठको से अनुरोध हैं कि वह डा. विनोदचन्द्र विद्यालंकार लिखित 'एक विलक्षण व्यक्तित्वरू स्वामी श्रद्धानन्द', पं. सत्यदेव विद्यालंकार लिखित 'स्वामी श्रद्धानन्द' तथा 11 खण्डों में प्रकाशित 'स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली' का अध्ययन करें। इससे वह स्वामी श्रद्धानन्द जी के व्यक्तित्व तथा कार्यों को विस्तृत रूप से जान सकेंगे।

महात्मा मुंशीराम जी ने सन् 1917 में मायापुर, हरिद्वार में संन्यास लिया था और नया नाम स्वामी श्रद्धानन्द धारण किया था। स्वामी जी ने शिक्षा जगत सहित देश की आजादी, दलितोद्धार, शुद्धि, सामाजिक आन्दोलनों व समाज सुधार के महनीय कार्यों को किया। इनका संक्षिप्त परिचय हम इस लेख में दे रहे हैं। सन् 1901 में स्वामी जी ने अपनी पुत्री अमृत कला का जाति–बंधन तोड़कर डा. सुखदेव जी से विवाह कराया था। सन् 1907 में देश में जन–जन की भाषा हिन्दी के महत्व के कारण अपने उर्दू पत्र 'सद्धर्म प्रचारक' को हिन्दी में प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी सन् 1909 में आर्यसमाज की शिरोमणी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रथम प्रधान बने थे। सन् 1909 में स्वामी जी ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र की स्थापना की थी। आज भी यह गुरुकुल फल फूल रहा है। स्वामी जी को सन् 1913 में भागलपुर (बिहार) में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अध्यक्ष बनाया गया था। आजादी के इतिहास में दिल्ली में एक अद्भुत घटना घटी थी। सन् 1919 में 30 मार्च को चांदनी चौक में एक आन्दोलन के नेतृत्व के समय अंग्रेजों की गोरी सेना की संगीनों के सामने स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना सीना तानकर सिंह–गर्जना की थी। वह अंग्रेज सैनिको को बोले थे 'हिम्मत है तो चलाओ गोली'। इस सिंह–गर्जना को सुनकर गोरे सैनिकों की संगीने नीचे झुक गयी थी। आजादी के इतिहास की यह एक दुर्लभ अद्वितीय घटना है। इस घटना से दिल्ली में सभी भारतवासी प्रसन्न, आह्लादित व रोमांचित हुए थे। स्वामीजी की वीरता के लिए उन्हें सम्मानित करने के लिये 4 अप्रैल, 1919 को उन्हें दिल्ली की जामा मस्जिद में आमंत्रित कर उसके मिम्बर से उनका सम्बोधन कराया गया था। यहां स्वामी जी ने वेदमंत्र बोल कर हिन्दू व मुसलमानों को देशभक्ति व परस्पर प्रेम का सन्देश दिया था। इसके बाद किसी हिन्दू विद्वान व नेता को यह जामा मस्जिद के मिम्बर से लोगों को सम्बोधन करने का सौभाग्य नहीं मिला। सन् 1919 में बैसाखी के दिन अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक शान्तिपूर्ण सभा में उपस्थित सभी देशभक्त लोगों पर अंग्रेजों ने गोलियां चलाकर उन्हें मार डालने का प्रयत्न किया। बड़ी संख्या में स्त्री, पुरुष व बच्चे इसमें मारे गये थे। इसके विरोध में 26 दिसम्बर, 1919 को अमृतसर में कांग्रेस का ऐतिहासिक अधिवेशन हुआ था। इस अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द जी को बनाया गया था। इसकी विशेषता यह रही कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कांग्रेस के मंच से प्रथमवार हिन्दी में अपना स्वागत भाषण पढ़ा। इसमें उन्होंने दलितोद्धार की भी चर्चा की थी। इसका विस्तृत विवरण स्वामी श्रद्धानन्द जी विषयक ग्रन्थों में पढ़ने को मिलता है जिसे सभी बन्धुओं को पढ़ना चाहिये। स्वामी जी ने 1920 में बर्मा की यात्रा की थी। उन्होंने नागपुर कांग्रेस में दलितोद्धार की योजना वा कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया था। दलितोद्धार के कार्यो से प्रभावित दलितों के सबसे बड़े नेता डा. भीमराव अम्बेडकर जी ने लिखा है कि स्वामी श्रद्धानन्द दलितों के सबसे बड़े हितैषी थे। दलितों के प्रति उनकी की गई सेवा का मूल्यांकन कौन कर सकता है? स्वामी जी समाजहित के सभी कार्यों में अग्रणीय भूमिका निभाते थे। सिखों के सन् 1922 के आन्दोलन 'गुरु का बाग मोर्चा' के अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्द जी 'अकाल तख्त, अमृतसर' में भाषण देकर जेल गए थे। उनको पशुओं को रखे जाने वाले पिंजड़े में रखकर यातनायें दी गई थी। स्वामी जी ने सन् 1923 में आगरा में 'शुद्धि सभा' का स्थापना की थी। इसके अन्तर्गत बड़े पैमाने पर धर्मान्तरित हिन्दु बन्धुओं की शुद्धि की गई थी। स्वामी जी दलितोद्धार के मुद्दे पर कांग्रेस से

(शेष पृष्ठ 4 पर)

भाजपा नेता मांगे राम गर्ग जयंती सम्पन्न

वीरवार 23 नवम्बर 2023, भाजपा दिल्ली प्रदेश के पूर्व अध्यक्ष श्री मांगे राम गर्ग के जन्मदिन पर भव्य समारोह का आयोजन नई दिल्ली के एन डी एम सी सभागार में किया गया। चित्र मे श्रीमती बाँसुरी स्वराज (सुपुत्री श्रीमती सुषमा स्वराज) के साथ अनिल आर्य, प्रवीण आर्य, सुमेधा गर्ग। द्वितीय चित्र में भाजपा दिल्ली प्रदेश कोषाध्यक्ष सतीश गर्ग के साथ अनिल आर्य, पिंकी आर्य, विकास गुप्ता।

आर्य समाज अशोक विहार-3 व राजौरी गार्डन का उत्सव सम्पन्न

रविवार 26 नवम्बर 2023, आर्य समाज अशोक विहार फेज 3,दिल्ली के वार्षिकोत्सव में प्रधान वेद मित्र अग्रवाल व मंत्री सोमेश सबरवाल का अभिनंदन करते अनिल आर्य, अनिता ग्रोवर, देवेन्द्र शास्त्री। द्वितीय चित्र– आर्य समाज राजौरी गार्डन दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर फिरोजपुर से आए आर्य गायक विजय आनंद का स्वागत करते हुए अनिल आर्य, प्रधान ओम प्रकाश अरोड़ा, मंत्री अनिल कवर, जगदीश रावल।

गुरुकुल गौतम नगर का उत्सव प्रारम्भ

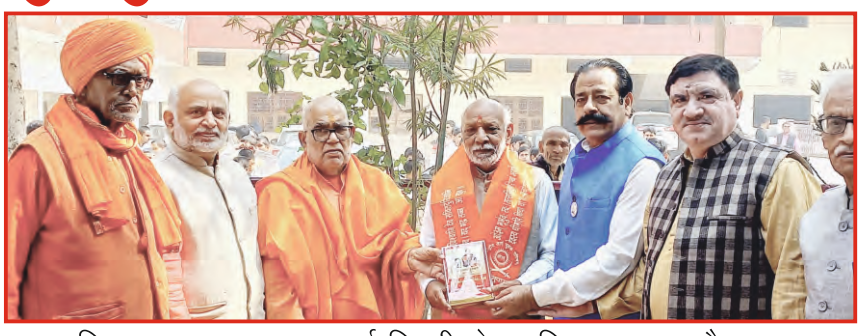

रविवार 26 नवम्बर 2023, नई दिल्ली के सुप्रसिद्ध गुरुकुल गौतम नगर का वार्षिक यज्ञ प्रारम्भ हुआ जिसका उद्घाटन ठाकुर विक्रम सिंह ने ओम ध्वज फहराकर किया। साथ मे स्वामी प्रणवानंद जी, अनिल आर्य, ओम प्रकाश यजुर्वेदी, श्याम लाल आर्य व स्वामी सौम्या नंद जी।

माता सुशीला हरिदेव आर्य पुण्य स्मृति में

भव्य संगीत संध्या

गायक कलाकार

सरदार सुरेन्द्रसिंह गुलशन जी (जालंधर)

रविवार 24 दिसंबर 2023,

शाम 3.30 से 6.30 बजे तक

स्थान आर्य समाज सूर्य निकेतन पूर्वी दिल्ली

ऋषि लंगर 6.30 बजे

आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं –

यशोवीर आर्य, प्रधान, मो. 9312223472

राष्ट्रीय अध्यक्ष

अनिल आर्य का आह्वान

19 दिसंबर को युवा गोष्ठियां करें

साथियो–अमर बलिदानी प.राम प्रसाद बिस्मिल का 19 दिसंबर को बलिदान दिवस आ रहा हैं। इस महान आर्य बलिदानी को इतिहास के पन्नों से हटाने का षडयंत्र हुआ है। अतः प्रत्येक आर्य कार्यकर्ता का कर्त्तव्य है कि 19 दिसंबर को एक यादगार दिवस बनायेः–1. युवा संगोष्ठी का आयोजन करे, 2.कोई भाषण/निबंध प्रतियोगिता रखे, 3. कोई खेल कूद टूर्नामेंट रखे, 4.समाचार पत्रों में लेख दे, 5.काव्य गोष्ठी करे, 6.बिस्मिल की आत्म कथा वितरण करे, 7. विद्यालय में प्रार्थना के समय बिस्मिल के जीवन पर चर्चा करे और जो आपको अच्छा लगे।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल से 590वां वेबिनार सम्पन्न

'प्राण–पंचकोष और स्वास्थ्य' पर गोष्ठी सम्पन्न

सात्विक आहार शरीर और मन के लिए आवश्यक है –योगाचार्य रजनी चुघ

शुक्रवार, 24 नवम्बर 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'प्राण–पंचकोष और स्वास्थ्य' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 589 वाँ वेबिनार था। योगाचार्य रजनी चुघ ने कहा कि शुद्ध सात्विक आहार हमारे शरीर और मानसिक विकास में सहायक है अतः हमें शाकाहार भोजन पर बल देना चाहिए।हमारा शरीर केवल भौतिक रूप से निर्मित नहीं है अपितु चार अन्य कोष अन्नमय कोष,प्राणमय कोष, विज्ञानमय कोष व आनंदमय कोष भी है। उन्होंने कहा कि हमारे खान पान से यह प्रभावित होता है साथ ही हमारी आभा को बढ़ाता है,प्राण सूक्ष्म भोजन है वह भोजन और पेय पदार्थ की तरह आवश्यक है। मानसिक ऊर्जा अन्न और प्राण से भी अधिक शक्तिशाली है।पूरी दुनियां मन में केंद्रित है इसलिए मन को यम नियमों को अपनाकर ध्यान करने से आपके मन में विचारों की गति अत्यंत धीमी हो जाती है और अच्छे अभ्यास से मन विचार–शून्य हो जाता है।पंचकोश ध्यान हमें आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढ़ाते हैं।प्रत्येक कोश का ध्यान और ज्ञान हमें परमात्मा तक पहुंचाने में सहायक सिद्ध होता है। इसलिए अपने पंचकोश पर प्रतिदिन ध्यान करने से सुख शांति और आनंद की अनुभूति होती है।गायत्री जाप,यज्ञ और प्रार्थना से बुद्धि, विवेक का विकास होता है।बुद्धि और विवेक से जीवन का विकास होता है।इन कोषों के सशक्त होने से ही परब्रह्म की प्राप्ति होती है। मुख्य अतिथि डॉ. रचना चावला व अध्यक्ष राज सरदाना ने भी सुखी जीवन के रहस्य पर प्रकाश डाला। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका प्रवीना ठक्कर, कमलेश चांदना, कुसुम भंडारी, कृष्णा गांधी,राजश्री यादव, सरला बजाज, उषा सूद, जनक अरोड़ा, चन्द्र कांता गेरा आदि के मधुर भजन हुए।

'कर्म और फल' पर गोष्ठी सम्पन्न

कर्म ही जीवन का आधार है –योगाचार्य अनिता रेलन

सोमवार 27 नवम्बर 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'कर्म और फल' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह करोना काल से 590 वाँ वेबिनार था। योगाचार्य अनिता रेलन ने कहा कि कर्म ही मनुष्य के जीवन का आधार है अतः निष्काम से कर्म करते रहना चाहिए। व्यक्ति जब फल की इच्छा करता है तो आसक्ति, राग, द्वेष उत्पन्न होता हैं। उन्होंने कहा कि हमें मोह अपने अंदर नहीं पैदा होने देना चाहिए, जब हमारे हाथ से कोई अच्छा काम होता है तो हमें बड़ी शांति मिलती है संतोष मिलता है प्रसन्नता मिलती है और हमारे हाथ से अगर कोई गलत काम हो जाता है तो मन अंदर से उथल–पुथल होने लग जाता है हमें हर हाल में संतुष्ट रहना होगा लाभ में सुख नहीं और हानि में दुख नहीं स्थिर रहने पर ही कर्म के प्रति आसक्ति ना होने पर ना होना ही संभव है अधिकांश लोग सत्कर्म का हिसाब रखते हैं पर यह उचित नहीं है अगर दाहिने हाथ से कुछ दिया गया है तो बाएं हाथ को पता भी नहीं चलना चाहिए गीता के तीसरे और पांचवें अध्याय को संक्षिप्त में बताते हुए कहां मनुष्य को कर्म किस प्रकार करना चाहिए कौन से कर्म करने चाहिए सच्चा कर्म किसे कहते हैं यही नहीं तीसरे अध्याय के पांचवी श्लोक में भी कहा गया है। कोई भी व्यक्ति एक क्षण भी कर्म करें बिना नहीं रह सकता यह बहुत स्पष्ट रूप में बताया गया जो वाणी को रोकता है मन में किसी को गाली देता है वह निष्कर्म नहीं है मतलब कर्म तो वह कर ही रहा है ना उसे मिथ्याचारी कहा जाता है मन पर अंकुश आता ही नहीं शरीर को रोक बिना परंतु शरीर के साथ–साथ मन को अंकुश में रखने का प्रयत्न होना ही चाहिए जब मन को अंकुश में रख लेते हैं तो मनुष्य शरीर द्वारा कर्मेंद्रिय द्वारा कुछ ना कुछ तो करेगा ही ना परंतु जिसका मन अंकुश में है उसके कान दूषित बातें नहीं सुनेंगे वर्ण ईश्वर भजन सुनेंगे सत पुरुषों की वाणी सुनेंगे इसी में आगे चलते हुए श्री कृष्ण अर्जुन से जब कहते हैं तो नित्य कर्म कर कर्म न करने से कर्म करना अधिक अच्छा है। आगे उन्होंने बताया मनुष्य के तीन गुण है तीन वृत्तीय हैं उनमें रजोगुण तमोगुण और सतोगुण ऐसा गीता के 14 अध्याय में भी कहा गया है सतोगुण कर्म योग से संन्यास व सुख उत्पन्न होता है रजोगुण कम लोक में पैदा करता है जिससे शांति पैदा होती है तमोगुण अज्ञान और आलस पैदा करता हैउपरोक्त या एक दूसरे को दबाकर ही बढ़ते हैं सातों गुण में करने वाला मोक्ष प्राप्त करता है रजोगुण में करने वाला कर्म में बना रहता है फिर जन्म लेता है तमोगुण नीच बनता है और जन्म लेता है जो सत्व राज्य तम को जान लेता है और सुख में सुखी और दुख में दुखी नहीं होता वह जन्म मरण रोग व बुढ़ापा आदि दुखों से छूट जाता है। अतः हमें अपने अंतरमन के कूड़े को साफ करते रहना चाहिए और वह कूड़ा क्या है। काम क्रोध लोभ मोहमद अपने कर्म के स्रोत को निर्मल करो उसे सबके हित के लिए समर्पित करो कर्तापन की भावना और अहम से बच्चो फल के आकांक्षा ना करो हमारे भीतर आनंद का ऐसा सागर उमड़ेगा जो हमें सुखी करेगा। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री पूजा सलूजा व अध्यक्ष नीलम आर्य ने भी अपने विचार व्यक्त किए ५ परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका सुनीता बुगा, प्रवीना ठक्कर, रविन्द्र गुप्ता, उषा मदान, राजश्री यादव, उषा सूद, कमलेश चांदना,सुषमा गोगलानी आदि के मधुर भजन हुए।

(पृष्ठ 2 का शेष)

अलग हुए थे। राजनीति में हिन्दू हितों की पूर्णतया उपेक्षा की जाती थी। इस कारण स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सन् 1923 में हिन्दू महासभा में प्रवेश किया था। उन्होंने हिन्दू संगठन नाम से एक लघु ग्रन्थ भी लिखा है जो सभी हिन्दुओं के पढ़ने योग्य है। आश्चर्य है कि आज भी हिन्दू नेता, संगठन तथा विशाल हिन्दू समाज अपने हितों की स्वयं ही उपेक्षा कर रहे हैं तथा अपने भविष्य की चिन्ता नहीं करते। यदि वह स्वामी श्रद्धानन्द जी की हिन्दू–संगठन पुस्तक को पढ़ लें तो आज भी हम हिन्दू समाज की रक्षा कर सकते हैं और इसको नष्ट करने के जो षडयन्त्र हो रहे हैं, उस पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए हिन्दुओं के जागने व उन्हें जगाने की आवश्यकता है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सन् 1924 में गांधी जी के निमन्त्रण पर बेलगाम–कांग्रेस में दर्शक–रूप में भाग लिया था। स्वामी जी ने सन् 1924 में वायकम (केरल) में जाति–पांति तथा ऊंच–नीच की सामाजिक प्रथाओं के विरुद्ध सत्याग्रह का नेतृत्व भी किया था। स्वामी जी ने कर्नाटक, आंध्र तथा चेन्नई प्रान्तों व नगरों की भी ऐतिहासिक यात्रायें की थीं। सन् 1925 में मथुरा में ऋषि दयानन्द जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर एक विशाल समारोह का आयोजन किया गया था। इसका नेतृत्व भी स्वामी जी ने ही किया। सन् 1925 में स्वामी जी दक्षिण भारत में वेद प्रचारार्थ गये थे। स्वामी जी के एक शिष्य व उच्चकोटि के वैदिक विद्वान पं. धर्मदेव विद्यामार्तण्ड जी ने जीवन भर दक्षिण भारत में रहकर वेद प्रचार का कार्य किया। स्वामी जी के दलितोद्धार व शुद्धि के कार्यों से विधर्मी उनके शत्रु बन गये थे। 23 दिसम्बर, 1926 को एक षडयन्त्र करके एक क्रूर हत्यारे अब्दुल रशीद द्वारा रुग्णावस्था में छल से स्वामी जी पर गोलियों का प्रहार किया गया जिससे वह वीरगति को प्राप्त हुए। ऋषि दयानन्द और पं. लेखराम जी के बाद धर्म के लिये बलिदान होने वाले वह तीसरे प्रमुख विप्र योद्धा थे। हम स्वामी श्रद्धानन्द जी के गौरवपूर्ण जीवन व कार्यों को स्मरण कर उनको श्रद्धांजलि देते हैं और आर्यबन्धुओं से निवेदन करते हैं कि वह स्वामी श्रद्धानन्द जी के विस्तृत जीवन चरित्र का अवश्य अध्ययन करें जिससे वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा के साथ हिन्दू समाज से अन्धविश्वासों व कुरीतियों को दूर किया जा सके।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 **मो.** : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970